

डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 6, पुस्तक सर्वेक्षण, कारण, पुष्टिकरण, सारांश और विशिष्टता

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बाउर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 6 है, आगमनात्मक पद्धति, पुस्तक सर्वेक्षण, कारण, पुष्टिकरण, सारांश, विशिष्टता, आदि।

हम यहां प्राथमिक संबंधों के बारे में बात करना जारी रख रहे हैं, और हम अब आगे बढ़ना चाहते हैं और कार्य-कारण के बारे में बात करना चाहते हैं, जो कारण से प्रभाव की ओर एक आंदोलन है।

और कार्य-कारण में मुख्य शब्द इसलिए है। फिर, आप स्पष्ट रूप से मौजूद हुए बिना कार्य-कारण नहीं पा सकते, जिस स्थिति में यह अंतर्निहित होगा। कारण अंतर्निहित होगा, लेकिन निश्चित रूप से जब भी आप ऐसा करते हैं, तो आप जानते हैं कि आपके पास कारण है।

यदि आपको लगता है कि आपके पास कारण हो सकता है और वहां कोई कारण नहीं है, तो इकाइयों के बीच कारण रखना आपके दिमाग में मददगार होगा। और यदि यह समझ में आता है, तो आप जानते हैं कि कार्य-कारण कम से कम प्रशंसनीय है। अब, हमारे पास मूलतः तीन प्रकार के कार्य-कारण हैं।

पहला प्रकार जिसका मैं उल्लेख करूंगा वह ऐतिहासिक कारण है, और मैंने यहां उसका उल्लेख किया है। ऐतिहासिक कारण-कारण का एक उदाहरण, जिसमें, वैसे, घटना ए का कारण या घटना बी शामिल है। यह कुछ इस तरह होता है। क्योंकि ये हुआ, इसलिए ये भी हुआ।

एक घटना अगली घटना का कारण बनती है या उत्पन्न करती है। वह ऐतिहासिक कारण है। इसका एक उदाहरण भविष्यवक्ताओं में पाप और न्याय के बीच आवर्ती कारण होगा, मान लीजिए आमोस की पुस्तक या उसके जैसी पुस्तक में।

जबकि मैं बार-बार कहता हूं, ऐसा कहा जाता है कि इज़राइल का पाप इज़राइल के पाप पर भगवान के परिणामी फैसले का कारण बनता है या उत्पन्न करता है। लेकिन आपके पास एक प्रकार का तार्किक कारण भी हो सकता है जहां लेखक एक बयान देता है और कहता है, यदि यह कथन सत्य है, तो इसका मतलब यह है कि यह भी सत्य है। दूसरे शब्दों में, चूंकि यह सत्य है, इसलिये यह भी सत्य है।

इसका एक उदाहरण, जो इस उदाहरण में पूरी किताब से नहीं, बल्कि किताब के एक छोटे से अंश से आया है, लेकिन यह इसे चित्रित करता है, वास्तव में मैथ्यू 1:1 से 17 में एक वंशावली है। आपको याद है कि आपके पास वंशावली सूची है वहाँ संयोगवश यीशु का जन्म चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया, जिसे 1:16 में ईसा मसीह कहा गया। और वह उस वंशावली से एक निष्कर्ष निकालता

है। वह कहता है, इसलिए, इब्राहीम से दाऊद तक सभी पीढ़ियाँ चौदह थीं, और दाऊद से निर्वासन तक चौदह थीं, और निर्वासन से मसीह तक चौदह थीं।

यह एक अनुमान है। आप देखिए, यह एक तार्किक निष्कर्ष है जिसे हम अभी जो मैंने कहा है उससे निकाल सकते हैं। आपके पास एक भयावह कारण भी हो सकता है।

हमारे पास यह तब होता है जब एक लेखक एक बयान देता है और फिर आगे बढ़ता है और इस बयान पर उचित प्रतिक्रिया के बारे में बात करता है और जो उसने अभी कहा है उसके परिणामस्वरूप आपको क्या करना चाहिए। क्योंकि यह एक मामला है, इसलिए आपको ऐसा करना चाहिए, या इसलिए आपको ऐसा करना चाहिए। विद्वान इसे संकेतात्मक से अनिवार्यता की ओर एक आंदोलन के रूप में संदर्भित करते हैं।

क्योंकि ऐसा है, इसलिए तुम्हें ऐसा करना चाहिए, या इसलिए तुम्हें करना चाहिए। पॉल वास्तव में अपने पत्रों को इस तरह से संरचित करना पसंद करते हैं, और इसलिए मैं कुलुस्सियों का उदाहरण देता हूँ, जो इस प्रकार के कार्य-कारण के अनुसार संरचित है। आपके पास वास्तव में कुलुस्सियों की पुस्तक में सैद्धांतिक कथन है।

आपके पास कोई उपदेश नहीं है, वास्तव में केवल सांकेतिक है, जब मैं सिद्धांत कहता हूँ, तो 1:3 से 2:5 में, और फिर 2:6 में, और शेष पुस्तक में, हमारे पास उपदेश के अलावा लगभग कुछ भी नहीं है, केवल कथन हैं, एक के बाद एक उपदेश। और आप देखेंगे कि 2:6 और 7 कैसे पढ़े जाते हैं, इसलिए आप मसीह यीशु प्रभु को प्राप्त करते हैं, जिसका वर्णन वह निस्संदेह 1:3 से 2:5 में कर रहा है, इसलिए आप मसीह यीशु प्रभु को प्राप्त करते हैं, इसलिए उसी में रहो, जड़ पकड़ो और विकसित हो जाओ, और विश्वास में स्थापित हो जाओ, जैसे तुम्हें प्रचुर धन्यवाद करना सिखाया गया है। क्योंकि मैंने मसीह यीशु के संबंध में जो कहा है, जिसे आपने 1:3 से 2:5 तक प्राप्त किया है, और विशेष रूप से उसकी पूर्ण पर्याप्तता के कारण, उद्धार के लिए उसके अलावा किसी और चीज की आवश्यकता नहीं है, इसलिए इन उपदेशों या इन आदेशों का पालन करें जो मैं देता हूँ बाकी किताब.

अब, पुष्टिकरण में वास्तव में वही दो घटक शामिल होते हैं जो हमारे पास कार्य-कारण में होते हैं, इसमें कार्य-कारणता शामिल होती है, वही दो घटक जो हमारे पास कार्य-कारण में होते हैं, केवल विपरीत क्रम में। जहाँ कार्य-कारण में कारण से प्रभाव की ओर गति शामिल होती है, वहीं पुष्टि में प्रभाव से कारण की ओर गति शामिल होती है। पुष्टिकरण के लिए प्रमुख नियम या शर्तें हैं क्योंकि या के लिए।

जब भी आपके पास दो इकाइयों के बीच 'क्योंकि' या 'के लिए' होता है, तो आप जानते हैं कि आपके पास पर्याप्तता है। लेकिन फिर भी, आप तब पुष्टि कर सकते हैं जब वहाँ स्पष्ट रूप से कोई 'क्योंकि' या 'के लिए' नहीं है। अब, एक उदाहरण, और फिर से आपके पास विभिन्न प्रकार की पुष्टि है, मूल रूप से तीन, वही तीन प्रकार की पुष्टि है जैसे आपके पास कार्य-कारण के संदर्भ में है।

पहला तार्किक भी है; हाँ, हम कह सकते हैं कि यह ऐतिहासिक है। हम ऐतिहासिक पुष्टि के बारे में बात करेंगे, जो वास्तव में हमारे पास योना 4:2 की पुस्तक में योना में है। और चलिए, आप स्वयं को याद दिलाना चाहेंगे कि योना 4:2 में आपके पास क्या है। मुझे लगता है कि आपको बड़े पैमाने पर योना की कहानी याद होगी, लेकिन याद रखें कि चौथा अध्याय, जो कि योना की किताब का आखिरी अध्याय है, आपके पास प्रभु और योना के बीच प्रभु के फैसले के बारे में बातचीत है, नहीं। नीनवे को नष्ट कर दो, उस फैसले से पश्चाताप करने के लिए जो वह नीनवे पर लाने वाला था। तो, हमने योना अध्याय 4 में पढ़ा कि इससे योना बहुत अप्रसन्न हुआ, और वह क्रोधित हुआ।

और उस ने यहोवा से प्रार्थना करके कहा, हे प्रभु, क्या मैं ने अपने देश में रहते हुए यही नहीं कहा था? इसी कारण मैं ने तर्शाश को भागने की जल्दी की, क्योंकि मैं जानता था, कि तू दयालु ईश्वर है, और दयालु है, क्रोध करने में धीमा है, और अटल प्रेम से परिपूर्ण है, और बुराई से पछताता है। दूसरे शब्दों में, मैंने वही किया जो मैंने अध्याय 1 और 2 में किया था, जो मैं अब कह रहा हूँ, क्योंकि मैं जानता था कि आप एक दयालु ईश्वर हैं, दयालु और दयालु, क्रोध करने में धीमे और दृढ़ प्रेम से भरपूर और बुराई से पश्चाताप करने वाले। अब, योना 4:2 में यह पुष्टि योना की पुस्तक को समझने के लिए बिल्कुल केंद्रीय है।

यदि आपके पास इस प्रकार का कथन नहीं था, यदि आपके पास 4:2 में यह पुष्टि नहीं थी, तो यह सोचना बिल्कुल स्वाभाविक होगा कि जब प्रभु का वचन अध्याय 1 में अमितताई के पुत्र योना के पास आया। और कहा, उठ, उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके विरुद्ध चिल्ला, क्योंकि दुष्टता मेरे साम्हने बढ़ गई है। और योना उठकर चल दिया, बिल्कुल ठीक उठा, परन्तु जहां तक उसका धन उसे ले जाता, उसके ठीक विपरीत दिशा में चला, और पूर्व की ओर नीनवे की ओर नहीं, परन्तु पश्चिम की ओर तर्शाश की ओर चला गया। आप सोचेंगे कि उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसे डर था कि नीनवे के लोग उसके संदेश को अस्वीकार कर देंगे और उसे नष्ट कर देंगे, उसे मार डालेंगे।

लेकिन अब, जब हम 4:2 में पढ़ते हैं, यह पुष्टि कथन, हम देखते हैं कि यह बिल्कुल भी मामला नहीं था, योना के प्रभु की उपस्थिति से तर्शाश भाग जाने का कारण यह नहीं था कि वह नीनवे के लोगों से डरता था उसके संदेश को अस्वीकार कर देगा और उसे मार डालेगा, उसे नष्ट कर देगा, बल्कि इसलिए कि उसे डर था कि नीनवे के लोग उसके संदेश को स्वीकार कर लेंगे और परमेश्वर उन्हें नष्ट नहीं करेगा। इसीलिए उसने वही किया जो उसने अध्याय 1 और 2 में किया। तो फिर, प्रभाव से कारण तक, आपके पास अध्याय 1 और 2 में योना के प्रभु की उपस्थिति से भागने की घटनाएँ हैं, और इसका कारण, इसका कारण यह 4.2 में दिया गया है। इसलिये मैं ने ऐसा किया, क्योंकि मैं जानता था, कि तू अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर है, क्रोध करने में धीमा है, और अटल प्रेम और बुराई के लिये मन फिराव करनेवाला है।

प्रभाव से कारण तक. इसी के चलते यह घटना घटी. अब, निस्संदेह, आपके पास एक तार्किक पुष्टि भी हो सकती है जहां लेखक आगे बढ़ता है और एक बयान देता है और फिर इंगित करता है कि वह कथन सत्य क्यों है।

मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ और जिस कारण से तुम्हें इस पर विश्वास करना चाहिए, वह इस कारण से है। 23वाँ स्तोत्र इस प्रकार की तार्किक पुष्टि का एक महान उदाहरण है। इसकी शुरुआत पद 1 में दिए गए कथन से होती है। प्रभु मेरा चरवाहा है, मैं नहीं चाहूँगा।

ध्यान दें कि दावा किया गया है। प्रभु मेरा चरवाहा है, मैं इच्छा नहीं करूँगा। मैं यह क्यों कहता हूँ कि प्रभु मेरा चरवाहा है और मैं इस चरवाहे का हाथ नहीं चाहता, इसका कारण यह है कि मैं श्लोक 2 से 6 में क्या कहता हूँ। श्लोक 2 से 6 इस दावे का समर्थन या पुष्टि करता है कि प्रभु वह मेरा चरवाहा है, मैं न चाहूँगा।

प्रभु मेरा चरवाहा है, मैं नहीं चाहूँगा, और जिस कारण से मैं ऐसा कहता हूँ, वह कारण जिसके कारण यह सच है, वह कारण जिसके कारण आपको इस पर विश्वास करना चाहिए वह वह है जो मैं श्लोक 2 और उसके बाद में कहता हूँ। वह मुझे हरी चराइयों में लिटाता है। वह मुझे शांत जल के पास ले जाता है।

वह मेरी आत्मा को पुनर्स्थापित करता है। यह बिल्कुल वैसा ही है, जैसा कि आप देखते हैं, एक चरवाहा, एक अच्छा चरवाहा क्या करता है। वह अपने नाम के निमित्त मुझे धर्म के मार्ग में ले चलता है।

चाहे मैं मृत्यु के साये की तराई में होकर चलूँ, तौभी विपत्ति से न डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है। तेरा छड और तेरी लाठी, वे मुझे सहूलियत देते हैं। तू मेरे शत्रुओं के साम्हने मेरे साम्हने मेज़ तैयार करता है।

प्राचीन काल में चरवाहे की मुख्य भूमिकाओं में से एक भेड़ों को चराना था। तू मेरे सिर पर तेल मलता है, मेरा प्याला उमण्डता है। निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ बनी रहेंगी, और मैं यहोवा के भवन में सर्वदा वास करूँगा।

यह कैसे प्रमाणित होता है कि यह इस दावे का समर्थन करता है: प्रभु मेरा चरवाहा है, मैं नहीं चाहूँगा। और फिर, निःसंदेह, आपके पास एक प्रेरक औचित्य भी है जहां आपके पास आदेश, उपदेश हैं, यह आदेशों के लिए एक और शब्द है, आदेश, और फिर कारण है कि उस आदेश या उन आदेशों का पालन क्यों किया जाना चाहिए। स्तोत्र 105 की संरचना इसी प्रकार की औषधात्मक पुष्टि के अनुसार की गई है।

असल में, मुझे कहना चाहिए कि यह भजन 100 है। और फिर पुष्टि श्लोक 5 में पाई जाती है। तो, आपके पास श्लोक 1 से 4 में उपदेश हैं। हे सभी देशों, प्रभु के लिए खुशी से शोर करो। प्रसन्नतापूर्वक प्रभु की सेवा करो।

गाते हुए उसकी उपस्थिति में आओ। यह जान लो कि प्रभु ही ईश्वर है। उसी ने हमें बनाया, और हम उसके हैं, हम उसके लोग हैं, उसकी चरागाह की भेड़ें हैं।

उसके फाटकों से धन्यवाद करते हुए, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो। उसका धन्यवाद करो, उसके नाम को धन्य कहो। क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करूणा सर्वदा बनी रहती है, और उसकी सच्चाई पीढ़ी पीढ़ी तक बनी रहती है।

तो, आपके पास वे उपदेश हैं, एक के बाद एक, पद 1 से 4 में आदेश हैं, और फिर कारण है कि उन आदेशों का पालन क्यों किया जाना चाहिए। क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करूणा सर्वदा बनी रहती है, और उसकी सच्चाई पीढ़ी पीढ़ी तक बनी रहती है। अब, एक और प्रकार का संबंध जिसे हम कभी-कभी बाइबिल की सामग्री में पाते हैं वह है उपकरणिकरण, जिसमें वास्तव में साधन से अंत तक की गति शामिल होती है।

यंत्रीकरण के दो रूप हैं। पहले प्रकार का उपकरण उद्देश्य का विवरण है। हमारे पास यह तब होता है जब आपके पास वास्तव में उद्देश्य का एक स्पष्ट बयान होता है, यानी उस तरह का एक स्पष्ट बयान होता है।

व्यवस्थाविवरण की पुस्तक यंत्रीकरण की पुनरावृत्ति के अनुसार संरचित है। यहाँ, आपके पास व्यवस्थाविवरण की पूरी किताब में बार-बार उद्देश्य का एक बयान है। बार-बार, लेखक कानून का पालन करने के उद्देश्य या अंत का वर्णन करता है।

ऐसा करो उस क्रम में. तो, आइए देखें कि व्यवस्थाविवरण 4:40 से शुरू होकर हमारे पास व्यवस्थाविवरण में क्या है। इस कारण तू उसकी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ मानना, जिस से तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो, और जिस देश में तेरा यहोवा है उस में तू बहुत दिन तक बना रहे। भगवान तुम्हें हमेशा के लिए देता है. और फिर 5:29 में। भला होता, कि उनका मन सदा की भाँति मेरा भय मानने और मेरी सब आज्ञाओं को मानने का होता, जिस से उनका और उनकी सन्तान का सर्वदा भला होता रहे।

5:33. जिस मार्ग की आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी है उसी के अनुसार चलना, जिस से तू जीवित रहे, और तेरा भला हो, और जिस देश का तू अधिकारनी होगा उस में तू बहुत दिन तक जीवित रहे। 6:2. 6:1 और 2. अब जो विधि और नियम तेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे तुझे सिखाने को दिए हैं वे यह हैं, कि जिस देश के अधिकारनी में तू रहने को है उस में तू उनको माना करना, जिस से तू तू और तेरा बेटा, और तेरा पोता अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, और जो विधियाँ और आज्ञा मैं तुझे सुनाता हूँ उन सब को जीवन भर मानते रहना। और जैसा कि आप देख सकते हैं, आपके पास यह है और वितरण के बारे में बात करते हैं। आप देखते हैं कि पुस्तक के एक बड़े हिस्से में यह आपके पास है।

असल में, मैं 13:17 पर जाता हूँ, लेकिन वास्तव में यह पूरी किताब में है, यहां तक कि अध्याय 13 से भी आगे। अब, आपके पास नीतिवचन की किताब की शुरुआत में उद्देश्य का एक बयान भी है। तो आपके पास नीतिवचन 1:2 से 6 में स्पष्ट रूप से बताई गई नीतिवचन की पुस्तक का उद्देश्य है। इसके लिए, मैं यहां आरएसवी से उद्धृत कर रहा हूँ, ताकि लोग ज्ञान और शिक्षा को जान सकें, अंतर्दृष्टि के शब्दों को समझ सकें, प्राप्त कर सकें बुद्धिमान व्यवहार, धर्म, न्याय और न्याय की शिक्षा, कि सरल लोगों को विवेक, जवानों को ज्ञान और विवेक दिया जाए, ताकि

बुद्धिमान व्यक्ति भी शिक्षा में वृद्धि सुन सकें, और समझदार व्यक्ति प्राप्त कर सकें एक कहावत और एक अलंकार, बुद्धिमानों के शब्द और उनकी पहेलियों को समझने का कौशल।

यह उल्लेखनीय महत्व का है, एक पुस्तक के भीतर उद्देश्य के बयान का यह व्यवसाय, क्योंकि यहां आपके पास लेखक स्पष्ट रूप से हमें इस पुस्तक का उद्देश्य बता रहा है। दूसरे शब्दों में, इसे लिखने का उनका इरादा पाठक पर इसके प्रभाव के संदर्भ में है, इससे पाठक पर क्या फर्क पड़ता है। फिर, यह न केवल पूरी किताब को समझने के लिए बल्कि किताब के भीतर अलग-अलग अंशों की व्याख्या करने के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस तरह के उद्देश्य का एक स्पष्ट बयान हमें नीतिवचन की किताब पढ़ते समय किसी भी व्यक्तिगत कहावत की व्याख्या करते समय पूछने के लिए आमंत्रित करता है।, वह कहावत किस प्रकार इस प्रयोजन की पूर्ति करती है ? और कहावत का उद्देश्य वास्तव में इस कहावत के अर्थ को कैसे उजागर करता है? और यह किताब के अलग-अलग अंशों की व्याख्या करने के मामले में बेहद उपयोगी हो सकता है।

अब, हमारे पास दूसरे प्रकार का उपकरण है, हालांकि, वह साधनों का वर्णन है, जहां आपके पास उस तरह का कोई कथन नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से या उसके माध्यम से की धारणा है, जिसे स्पष्ट किया जा सकता है या अन्तर्निहित। कभी-कभी आपके पास वास्तव में ये शब्द होते हैं या इसके माध्यम से, लेकिन यह अंतर्निहित भी हो सकता है, जहां पुस्तक के भीतर एक मार्ग या एक तत्व किसी और चीज़ के लिए एक साधन के रूप में कार्य करता है, यही पुस्तक के भीतर इसकी आवश्यक भूमिका है। मुझे लगता है कि इसका एक अच्छा उदाहरण यह है कि जोशुआ की पुस्तक में, यहोशू लोगों को भूमि देने और उस पर बसाने के यहोवा के कार्य का साधन या एजेंट है।

यह मूलतः यहोशू की पुस्तक में यहोशू के व्यक्ति की भूमिका या कार्य है। वह साधन है। बेशक, जब आप मानवीय साधनों के बारे में बात करते हैं, तो आप जानते हैं, अधिक सटीक रूप से, आप एजेंसी या उसके जैसे कुछ के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन वैसे भी, वह लोगों को जमीन देने और उस पर उन्हें रोपने के ईश्वर के कार्य के साधन या एजेंट के रूप में कार्य करता है। .

तो, यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि यहोशू ईश्वर द्वारा लोगों को भूमि पर लाने, उन्हें भूमि में स्थापित करने और उन्हें भूमि देने का एक साधन है। यह एक भूमिका है जिसे वह निभाता है, और इसे ध्यान में रखने के लिए जोशुआ की किताब या जोशुआ की किताब के अलग-अलग अंशों की व्याख्या करते समय यह बहुत महत्वपूर्ण है। एक अन्य प्रकार का संबंध तैयारी और अहसास का है।

इसके लिए दूसरा शब्द है परिचय। इसमें घटनाओं या विचारों के लिए पृष्ठभूमि या सेटिंग प्रदान करना शामिल है। कहने का तात्पर्य यह है कि, इसका आवश्यक उद्देश्य या इस परिच्छेद की आवश्यक भूमिका या कार्य इसके बाद आने वाली पृष्ठभूमि प्रदान करना है।

अब, निःसंदेह, आप इसे पत्रियों में पाते हैं। वास्तव में, पत्रों का तथाकथित अभिवादन तैयारी और अहसास के रूप में कार्य करता है। इसका एक उदाहरण, उदाहरण के लिए, इसका एक उदाहरण गैलाटियन होगा।

मुझे देखने दो। खैर, मैंने यहां फिलेमोन का उल्लेख किया है। हम पॉलीन की अनेक पत्रियों का उल्लेख कर सकते हैं।

फिलेमोन के अलावा, मैं गलातियों का भी उल्लेख करना चाहता हूँ। पौलुस, एक प्रेरित, न मनुष्य की ओर से, न मनुष्य के द्वारा, परन्तु यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिस ने उसे मरे हुआओं में से जिलाया, और उन सब भाइयों के द्वारा जो मेरे साथ गलातिया की कलीसियाओं में आ गए। परमपिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले, जिन्होंने हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें वर्तमान बुरे युग से बचाने के लिए हमारे पापों के लिए स्वयं को दे दिया, जिनकी महिमा युगानुयुग होती रहे।

तथास्तु। अब, आप देखेंगे कि यह पृष्ठभूमि या सेटिंग प्रदान करता है, जिसके अनुसार हमें शेष पुस्तक को समझना है। पॉल जिस लेखक की पहचान करता है, उसके संदर्भ में लेखक खुद को पॉल और एक प्रेरित के रूप में पहचानता है।

पॉल हमेशा अपने बारे में एपोस्टोलोस, एक प्रेरित के रूप में बात करके इस तरह से अपनी पुस्तकों का परिचय नहीं देता है, लेकिन वह यहाँ ऐसा करता है, जो, फिर से, हमें उस चीज़ के लिए तैयार कर सकता है जो आपके पास बाकी किताब में है। उदाहरण के लिए, यह सुझाव दे सकता है कि पॉल की प्रेरिताई का मुद्दा गलाटियन चर्चों में एक मुद्दा है जिसे वह संबोधित करना चाहता है और उसे लगता है कि इस पर जोर देना महत्वपूर्ण है। लेकिन वैसे भी, आपके पास यहाँ पृष्ठभूमि के एक भाग के रूप में, पॉल एक प्रेरित है, और फिर, निस्संदेह, मनुष्य से नहीं और न ही मनुष्य के माध्यम से, बल्कि यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के माध्यम से, जिसने उसे मृतकों में से उठाया।

यह व्यवसाय कि पॉल की प्रेरिताई और उसका सुसमाचार मनुष्यों से नहीं बल्कि ईश्वर से उत्पन्न होता है, संयोगवश, पुस्तक के भीतर एक प्रमुख जोर है। आप इसे पहले से ही यहां परिचय या पृष्ठभूमि और बाकी सभी तरीकों से सुझाए गए पाते हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है, जब आपके पास इस प्रकार की चीज़ हो, तो पूछें, ठीक है, वास्तव में वे कौन से तत्व हैं जो हमारे यहाँ पृष्ठभूमि या परिचयात्मक कथन में हैं, और वे हमें शेष पुस्तक के लिए कैसे तैयार करते हैं, ताकि हमारा यदि हमारे पास यह पृष्ठभूमि जानकारी न होती तो शेष पुस्तक की समझ भिन्न होती? अधिक सकारात्मक रूप से कहें तो, पृष्ठभूमि की जानकारी वास्तव में आपके पास जो कुछ भी है उसे कैसे उजागर करती है, न केवल किताब बल्कि पूरी किताब के अलग-अलग अंशों को? अब, तैयारी की प्राप्ति का एक विशिष्ट रूप भविष्यवाणी और पूर्ति है।

जब आपके पास किसी पुस्तक के भीतर एक भविष्यवाणी होती है जो बाद में उस पुस्तक के भीतर पूरी होती है, तो यह तैयारी की प्राप्ति का एक विशिष्ट रूप है, क्योंकि भविष्यवाणी, निश्चित रूप से, बाद में उस भविष्यवाणी की पूर्ति या प्राप्ति के लिए तैयार करती है। वैसे, आपके पास यह बार-बार किंग्स की किताब के भीतर है, जहां 25 बार, वास्तव में, किंग्स की किताबों में, किंग्स वास्तव में एक किताब है। तथ्य यह है कि आपके पास 1 और 2 राजाओं के बीच विभाजन है, यह सिर्फ एक आकस्मिक विभाजन है।

आपके पास दो किताबें नहीं हैं, बल्कि वास्तव में सिर्फ एक है। आपके वहां रुकने का कारण यह है कि लेखक के पास स्कॉल की जगह खत्म हो गई थी, और इसलिए उसके पास एक स्कॉल खत्म हो गया और उसे किंग्स की किताबों में एलिय्याह कथा के ठीक बीच में दूसरे स्कॉल का उपयोग शुरू करना पड़ा। लेकिन राजाओं की किताबों में 25 बार, आपके पास एक भविष्यवाणी है जो पूरी होती है, और हमेशा, भगवान के वचन के अनुसार पूर्ति होती है।

तो, भविष्यवाणी वास्तव में एक भविष्यवाणी है, आमतौर पर एक भविष्यवक्ता की ओर से, और फिर प्रभु के वचन के अनुसार पूरी होती है। राजाओं की पुस्तकों के लिए बहुत, बहुत महत्वपूर्ण। एक अन्य प्रकार का संबंध सारांशीकरण है, जिसमें सामग्री की एक इकाई से पहले या बाद में संक्षिप्तीकरण या सारांश शामिल होता है।

अब, सारांश, आप पहचानेंगे, एक सामान्य कथन के समान हो सकता है। हमने उल्लेख किया है कि कभी-कभी आपके पास एक सामान्य कथन हो सकता है, विशेष रूप से तार्किक विशिष्टता या तार्किक सामान्यीकरण के संदर्भ में बात की जाती है, जहां आपके पास एक थीसिस होती है कि लेखक आगे बढ़ता है और विकसित करता है, मंत्रमुग्ध करता है, और अनपेक्षित करता है। लेकिन एक सारांश कथन कम सामान्य, अधिक विशिष्ट होता है और इसमें विवरण की मात्रा अधिक होती है।

यह अनिवार्य रूप से एक बिंदु-दर-बिंदु पुनर्पूजाकरण है, एक बिंदु-दर-बिंदु पुनर्पूजाकरण है, या यदि सारांश जो सारांशित किया गया है उसकी शुरुआत में आता है, तो आप कह सकते हैं कि जो सारांशित किया जा रहा है उसका पूर्व-पूजाकरण। मुझे लगता है कि इसका एक अच्छा उदाहरण वास्तव में न्यायाधीश 2:11 से 23 है। और फिर, आप इस अनुच्छेद के लिए यहां अपनी बाइबिल को देखना चाह सकते हैं।

और मुझे लगता है, आपको याद होगा कि न्यायाधीशों की पुस्तक में हमारे पास क्या है, आपके पास न्यायाधीशों की यह श्रृंखला और न्यायाधीशों के उत्तराधिकार की कहानी कैसे है, एक के बाद एक न्यायाधीश, ओथनील से शुरू होकर सैमसन तक, अध्यायों में, ठीक है, वास्तव में, हम अध्याय 3 से 16 में कह सकते हैं। लेकिन उससे पहले, आपके पास वास्तव में इस पूरी अवधि का सारांश है। और यह पाया गया है, जैसा कि मैंने कहा, यहां 2:11 से 23 तक।

और इस्राएल के लोगों ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, और बाल देवताओं की उपासना करते थे। और उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को, जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया था, त्याग दिया। वे अपने आस-पास के लोगों के देवताओं में से दूसरे देवताओं के पीछे चले गए, और उन्हें दण्डवत् किया।

और उन्होंने यहोवा को क्रोधित किया। उन्होंने यहोवा को त्याग दिया और बाल देवताओं और अशतोरेत देवताओं की उपासना करने लगे। इस प्रकार यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भड़क उठा, और उस ने उनको लुटेरों के वश में कर दिया, जो उनको लूटते थे।

और उस ने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ में बेच दिया, कि वे फिर अपने शत्रुओं का सामना न कर सकें। जब जब वे निकलते थे, तब तब यहोवा का हाथ उन पर बुराई करने के लिये होता था, जैसा कि यहोवा ने उनको चिताया था, और यहोवा ने उन से शपथ खाई थी, और वे बड़े संकट में पड़ गए। तब यहोवा ने न्यायाधीशों को खड़ा किया जिन्होंने उन्हें लूटने वालों की शक्ति से बचाया।

तौभी उन्होंने अपने न्यायियों की न सुनी, क्योंकि वे दूसरे देवताओं के पीछे हो कर व्यभिचार करते और उनको दण्डवत् करते थे। वे शीघ्र ही अपने पुरखाओं के मार्ग से फिर गए, जो यहोवा की आज्ञाओं का पालन करते थे, और उन्होंने ऐसा नहीं किया। जब जब यहोवा ने उनके लिये न्यायी ठहराए, तब तब यहोवा न्यायी के संग रहा, और न्यायी के जीवन भर उनको शत्रुओं के हाथ से बचाता रहा।

क्योंकि जो उनको सताते और अन्धे करते थे उनके कारण उनका कराहना सुनकर यहोवा को तरस आया। परन्तु जब कभी न्यायी मर जाता, तब वे फिर जाते, और अपने पुरखाओं से भी बुरा व्यवहार करते, और दूसरे देवताओं के पीछे हो लेते, और उनकी उपासना करते, और उनको दण्डवत् करते। उन्होंने अपनी कोई भी प्रथा या अपना जिद्दी तरीका नहीं छोड़ा।

इस प्रकार यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भड़क उठा। और उस ने कहा, क्योंकि उसकी प्रजा ने मेरी वाचा का उल्लंघन किया है, जो मैं ने उनके पुरखाओं को दी थी, और मेरी बात नहीं मानी, इस कारण जितनी जातियों को यहोशू ने मरने के समय छोड़ दिया था, उन में से किसी को मैं उनके साम्हने से न निकालूंगा, कि उन से मैं परख करूँ इस्राएल, क्या वे अपने पुरखाओं की नाई यहोवा के मार्ग पर चलने का ध्यान रखेंगे या नहीं। इसलिए प्रभु ने उन राष्ट्रों को छोड़ दिया, उन्हें तुरंत बाहर नहीं निकाला, और उसने उन्हें यहोशू के अधिकार में नहीं दिया।" अब, यह स्पष्ट रूप से न्यायाधीशों की विभिन्न कहानियों में आपके पास जो कुछ है उसका एक बिंदु-दर-बिंदु सारांश है।

ओथनील, एहुद, डेबोरा, गिदोन, जेफ्था, सैमसन, बिंदु-दर-बिंदु पूर्वपूजाकरण का मतलब, निश्चित रूप से, हमें यह समझने में मदद करना है कि वहां के विशिष्ट न्यायाधीशों के व्यक्तिगत खातों में क्या शामिल है। और फिर वे व्यक्तिगत खाते भी सारांश कथन में कही गई बातों को विशिष्ट सामग्री देते हैं। अब, सारांश कथन द्वारा सारांशित की गई पुस्तक या अंशों की व्याख्या करने के लिए एक सारांश कथन बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है।

और यह वास्तव में लगभग तीन तरीकों से होता है। एक तो सारांश कथन के वर्णन का ढंग। आप जानते हैं, न्यायाधीशों के लेखक, और सारांश के संबंध में यह लगभग हमेशा सच है, न्यायाधीशों के लेखक हजारों अलग-अलग तरीकों से न्यायाधीशों की अवधि का सारांश दे सकते थे।

लेकिन उन्होंने इस भाषा का उपयोग करके, इन शब्दों और इसी तरह के शब्दों का उपयोग करके, इस पूरी अवधि का वर्णन करने के लिए और इसके बाद आने वाले विवरणों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए शेष पुस्तक के अधिकांश भाग को संक्षेप में प्रस्तुत करने का विकल्प चुना। तो यह महत्वपूर्ण है. निःसंदेह, आपके पास चयनात्मकता का पूरा मुद्दा भी है।

क्योंकि, निःसंदेह, उसके पास वही हो सकता है जो आपके सारांश कथन में है क्योंकि यह एक सारांश कथन है, और आवश्यक रूप से चयनात्मक है। सारांश कथन में, लेखक वास्तव में यहाँ पाठक को बताता है कि हमें संक्षेप में प्रस्तुत की जाने वाली बातों का सबसे महत्वपूर्ण विवरण क्या मानना चाहिए। अब, कभी-कभी, एक सारांश कथन में, आपके पास कुछ विवरण होंगे जो सामने रखे गए हैं जो उन चीजों को इंगित करते हैं जो महत्वपूर्ण हैं अन्यथा हम चूक सकते हैं यदि हमारे पास वह सारांश विवरण नहीं होता।

और इसलिए आपके पास यहां इस कथन में है, उदाहरण के लिए, लूट का पूरा कारोबार और इस तरह का पूरा कारोबार, और उन लोगों के कारण भगवान को दया आ गई जिन्होंने उन्हें पीड़ित और उत्पीड़ित किया था। यह कुछ ऐसा है, कि यहोवा को दया आने की बात कुछ ऐसी है जिसे आपने विशिष्ट न्यायाधीशों और इस तरह के सभी विशेष आख्यानों में व्यक्त नहीं किया है। तो आप देख सकते हैं कि यहां कुछ ऐसे विवरण हैं जिन्हें हाइलाइट किया गया है।

सारांशित सामग्री में इन्हें बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। और जैसा कि मैंने कहा, हमने उन्हें सारांश वक्तव्य में नहीं रखा था; हो सकता है कि हम उसे चूक जाएं। साथ ही, सारांश कथन की संरचना स्वयं काफी महत्वपूर्ण हो सकती है।

और आप इसे यहां न्यायाधीशों के इस उदाहरण में पाते हैं, जहां आपके पास वास्तव में सारांश कथन के भीतर ही प्रभु द्वारा राष्ट्रों को बाहर नहीं निकालने के उद्देश्य का एक बयान है। पद 21 में, मैं उन जातियों में से किसी को भी उनके आगे से न खदेड़ूंगा जिन्हें यहोशू ने मरने के बाद छोड़ दिया था, ताकि मैं उनके द्वारा इस्राएल को परखूं, कि वे अपने पुरखाओं की नाई यहोवा के मार्ग पर चलने का ध्यान रखेंगे या नहीं। नहीं। तो दूसरे शब्दों में, आपके पास राष्ट्रों को भूमि पर छोड़ने का एक प्रकार का दिव्य उद्देश्य है।

ये राष्ट्र जो न्यायाधीशों के पूरे काल में बार-बार इस्राएल के पक्ष में कांटे बने रहे, परमेश्वर के लोगों के लिए महान संकट के अवसर हैं। उसका उद्देश्य उनके द्वारा इस्राएल को परखना है, ताकि यह देख सके कि वे अपने पुरखाओं की नाई यहोवा के मार्ग पर चलने का ध्यान रखेंगे या नहीं। फिर, इसके अलावा, सारांश कथन का तत्काल संदर्भ सारांश कथन को सूचित कर सकता है और इस प्रकार उस सामग्री को सूचित कर सकता है जिसे उस कथन द्वारा संक्षेपित किया गया है।

एक अन्य प्रकार का संबंध पूछताछ है, जिसमें एक प्रश्न या समस्या के बाद उसका उत्तर या समाधान शामिल होता है। अब, वास्तव में पूछताछ दो प्रकार की होती है। एक प्रश्न-उत्तर प्रकार की पूछताछ है, जहां वास्तव में आपके पास एक वाक्य होता है जिसका अंत प्रश्न चिह्न के साथ होता है और उसके बाद उसका उत्तर होता है।

इसका एक बड़ा उदाहरण, वास्तव में, पुस्तक स्तर पर मलाकी की पुस्तक है, जहाँ मलाकी की पुस्तक को पूछताछ की पुनरावृत्ति के अनुसार संरचित किया गया है। एक के बाद एक सवाल और जवाब. आइए इस पर नजर डालें.

1:2 से शुरू होता है: प्रभु कहते हैं, मैं ने तुम से प्रेम रखा, परन्तु तुम कहते हो, कि तू ने हम से कैसा प्रेम रखा? प्रश्न करो, फिर उत्तर दो। क्या एसाव याकूब का भाई नहीं है, यहोवा की यही वाणी है? तौभी मैं ने याकूब से प्रेम रखा, परन्तु एसाव से बैर रखा। फिर हमारे पास 1.6 में फिर से है, एक बेटा अपने पिता का और एक नौकर अपने मालिक का सम्मान करता है।

यदि मैं पिता हूँ तो मेरा सम्मान कहां है? और यदि मैं स्वामी हूँ, तो मेरा डर कहां है? सेनाओं के यहोवा का यही कहना है। हे याजक, तुम से जो मेरे नाम का तिरस्कार करते हो, तुम कहते हो, हम ने कैसे तेरे नाम का तिरस्कार किया है? प्रश्न जवाब। मेरी वेदी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाने से।

और तुम कहते हो, हम ने उसे कैसा प्रदूषित किया है? प्रश्न, उसके बाद उत्तर। यह सोचकर कि भगवान की मेज का तिरस्कार किया जा सकता है, आदि। फिर हमारे पास यह 2.13 में फिर से है, और यह फिर से आप करते हैं।

तुम यहोवा की वेदी को आंसुओं, रोने और कराहने से ढांप देते हो, क्योंकि वह अब तुम्हारी भेंट की ओर ध्यान नहीं करता, और न तुम्हारे हाथ से प्रसन्न होकर उसे ग्रहण करता है। आप पूछते हैं, वह ऐसा क्यों नहीं करता? प्रश्न जवाब। क्योंकि यहोवा तुम्हारे और तुम्हारी जवानी की पत्नी के बीच जो वाचा बान्धी गई थी उस पर तुम ने गवाही दी, तौभी तुम ने उस से विश्वासघात किया, यद्यपि वह वाचा के अनुसार तुम्हारी सहचरी और तुम्हारी पत्नी है।

तो फिर, पद 15 में प्रश्न और उत्तर। क्या उसी परमेश्वर ने हमारे लिये जीवन की आत्मा को बनाया और कायम नहीं रखा? और वह क्या चाहता है? प्रश्न जवाब। ईश्वरीय संतान।

फिर, अध्याय दो के श्लोक 17 में, आपने अपने शब्दों से प्रभु को चिंतित किया है, फिर भी आप कहते हैं, हमने उन्हें कैसे चिंतित किया है? प्रश्न जवाब। यह कहकर, कि जो कोई बुरा करता है वह यहोवा की दृष्टि में अच्छा है, और वह उन से प्रसन्न होता है, या यह पूछता है, कि न्याय का परमेश्वर कहां है? पुनः, अध्याय तीन, श्लोक छह में। मैं, प्रभु, नहीं बदलता; इस कारण हे याकूब के पुत्रो, तुम नष्ट न होओ।

तुम अपने पुरखाओं के दिनों से ही मेरी विधियों से फिरते आए हो, और उनका पालन नहीं करते हो। मेरे पास लौट आओ, और मैं तुम्हारे पास लौट आऊंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। परन्तु तुम कहते हो, हम कैसे लौटें? प्रश्न जवाब।

क्या कोई आदमी भगवान को लूटेगा कि तुम मुझे लूट रहे हो? परन्तु तुम कहते हो, हम तुम्हें कैसे लूट रहे हैं? प्रश्न जवाब। तेरे दशमांश और भेंट में तुझे शाप दिया गया है, क्योंकि तू मुझ से अर्थात् अपनी सारी जाति से लूटता है। फिर, 3:13.

यहोवा की यह वाणी है, कि तेरे वचन मेरे विरुद्ध कठोर हैं, तौभी तुम कहते हो, हम ने तेरे विरुद्ध क्या कहा है? प्रश्न जवाब। आपने कहा है कि भगवान की सेवा करना व्यर्थ है, लेकिन यह हमारे लिए अच्छा है कि हम उसके आदेश का पालन करें, या शोक मनाते हुए चलें, इत्यादि। तो, आप देखिए, मलाकी की पूरी किताब वास्तव में प्रश्न और उत्तर के अनुसार संरचित है।

लोग प्रभु से प्रश्न पूछ रहे हैं। प्रभु भविष्यवक्ता के माध्यम से एक घोषणा करता है। लोग फिर सवाल पूछते हैं कि ऐसा कैसे? यह एक केस क्यों है? और फिर प्रभु, भविष्यवक्ता के माध्यम से, उनके प्रश्न का उत्तर देते हैं।

प्रत्येक मामले में, लोगों को पता नहीं होता कि प्रभु क्या कह रहे हैं, और फिर प्रभु उनके प्रश्नों के उत्तर के माध्यम से उन्हें सही करते हैं। पूछताछ का एक अन्य प्रकार समस्या-समाधान प्रकार की पूछताछ है। और मुझे खेद है कि ओवरहेड के संदर्भ में यह इतना स्पष्ट नहीं है, लेकिन हम इसे केनन के भीतर कई स्थानों पर पाते हैं।

मैं इसके उदाहरण के रूप में रूथ की पुस्तक का उल्लेख कर सकता हूँ, जहाँ आपके पास, निश्चित रूप से, अध्याय एक में, वास्तव में एक दोहरी समस्या है, और वह है भूमि में अकाल की समस्या, सूखा, यहूदा की भूमि में अकाल। निःसंदेह, यह नाओमी के परिवार को मोआब में स्थानांतरित होने का अवसर देता है, और, उससे संबंधित, मृत्यु की समस्या। नाओमी ने मृत्यु के माध्यम से न केवल अपने पति को बल्कि अपने दो बेटों को भी खो दिया।

और इसलिए, आपके पास फलहीनता, अकाल, भूख, और दुःख, अकेलेपन की समस्या है, अध्याय एक में - अकेलापन, वास्तव में। तो, अध्याय एक के अंत में, नाओमी कहती है, अब मुझे नाओमी मत कहो, जिसका अर्थ सुखद है, बल्कि मुझे कड़वा, इत्यादि कहो।

लेकिन पहले ही अध्याय एक के अंत में, हमने पढ़ा कि नाओमी और उसकी बहू, रूथ, यहूदा लौट आती हैं, और रूथ के पहले अध्याय के अंत में आपके पास एक बहुत ही गहरा बयान है, और यह था जौ की फ़सल की शुरुआत, जो वास्तव में इस तथ्य की आशा करती है कि अधिनियम की शेष पुस्तक में, दोहरी समस्या का दोहरा समाधान होगा। भूख, अकाल और सूखे की समस्या का समाधान फसल से होता है। और इसलिए, रूथ की बाकी किताब में भोजन की कटाई और उस जैसी चीज़ों और भोजन के बंटवारे पर बहुत जोर दिया गया है।

और, निस्संदेह, मृत्यु की समस्या, और परिवार की कमी, अकेलेपन और अकेलेपन की समस्या रूथ की बोअज़ से शादी से हल हो जाती है, और विशेष रूप से बच्चे ओबेद की शादी के मुद्दे से, जो कि दिलचस्प बात यह है कि किताब का अंत रूथ द्वारा नहीं, बल्कि नाओमी द्वारा किया गया है। और इसलिए, पुस्तक के अंत में, निस्संदेह, वह घोषणा करती है कि प्रभु ने वास्तव में उसे भर दिया है। समस्या समाधान।

दावे को समझने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, रूथ की पुस्तक का संदेश, साथ ही व्यक्तिगत अंश, एक बार फिर, रूथ की पुस्तक के भीतर, यह पता लगाना कि वास्तव में, रूथ की पुस्तक के भीतर व्यक्तिगत मार्ग कैसे भाग लेते हैं, इस व्यापक समस्या के भीतर कार्य करते हैं - समाधान जटिल, और यह कैसे, वास्तव में, पूरी किताब में अलग-अलग अंशों के अर्थ, विशिष्ट अर्थ को उजागर करता है। खैर, हमने तथाकथित प्राथमिक संबंधों का वर्णन किया है। यह ब्रेक लेने के लिए एक अच्छी जगह है।

जब हम अगले खंड में वापस आएंगे, तो हम सहायक संबंधों के बारे में बात करेंगे।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 6 है, आगमनात्मक पद्धति, पुस्तक सर्वेक्षण, कारण, पुष्टिकरण, सारांश, विशिष्टता, आदि।